om-13 final_Page 1 and 2 07-10-2014 20:59 Page 9

सिरोही। मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता के लिए जिला पत्रकार संघ अध्यक्ष ब्र.कु.अवतार को स्मृति चिन्ह व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित करते जिला परिषद प्रमुख चन्दन सिंह देवड़ा व जिला कलेक्टर वी. सरवन कुमार।

सिवनी-केवलारी। श्रीमद्भगवद् गीता एवं रामायण पर आधारित आध्यात्मिक सम्मेलन में प्रवचन करते हुए ब्र.कु. गीता।

अहमदाबाद-लोटस। आर.बी.ज़ला,सी.सी.एफ,गवर्नमेंट फॉरेस्ट नर्सरी डिपार्टमेंट,सरदार नगर हंसोल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. निकिता।

अररिया-विहार। आरक्षी अधीक्षक विजय कुमार वर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. उर्मिला। साथ हैं ब्र.कु. शकुंतला।

बड़ौत। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर चैतन्य झाँकी का उद्घाटन करते हुए स्वामी धर्मवेश, एस.डी.एम. राजेन्द्र सिंह तथा ब्र.कु. मोहिनी,सेवाकेन्द्र संचालिका।

विलासपुर-छ.ग.। जन्माष्टमी के अवसर पर सेवाकेन्द्र में आयोजित चैतन्य झाँकी का एक मनोरम दृष्य।

वास्तविकता को जानें और निर्भय होकर कर्तव्य करें

जब युद्ध के मैदान में अर्जुन हतोत्साहित हो जाता है तथा मन को सही दिशा में ले जाने के लिए मार्गदर्शन की आवश्यकता महसूस होती है, ऐसे समय पर उसे आशा की किरण दिखाई पड़ती है और वो देखता है कि स्वयं परमात्मा मार्ग निर्देशन देने के लिए उपस्थित हैं। उसकी सत्ता, आस्था दर्शाती है। वे मनुष्य के मन को भ्रमित करने वाले अनेक प्रश्नों का उत्तर देते हैं और ये सत्य ज्ञान देते हैं कि तुम शरीर नहीं 'आत्मा' हो, देह से भिन्न, सूक्ष्म शक्ति, चैतन्य शक्ति आत्मा हो। फिर भगवान आत्मा का ज्ञान देना प्रारंभ करते हैं। ये शरीर कर्म करने का एक क्षेत्र है, जिसमें बोया हुआ भले और बुरे कर्म का बीज संस्कार रुप में सदैव उगता है। दस इंद्रियों के क्षेत्र का ये विस्तार है और प्रकृति से उत्पन्न तीन गुणों से (सतो, रजो और तमो) विवश होकर मनुष्य को कर्म करना पड़ता है। वह क्षण मात्र भी कर्म के बिना नहीं रह सकता है, इसलिए उसको कर्मक्षेत्र या कुरुक्षेत्र कहते हैं। भगवान सबसे पहले अर्जुन को युद्ध की विधि-विधान बताते हैं कि सुख-दुःख, सर्दी-गर्मी, मान-अपमान को सहन करना एक भरतवंशी पर निर्भर करता है। भावार्थ ये है - गीता के दूसरे अध्याय में सबसे पहला विधान भगवान यही बताते हैं कि भरतवंशी का सबसे बड़ा संस्कार है 'सहन करना'। तो वह युद्ध कैसे करेगा? इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यह 'मनोयुद्ध' की बात है, कोई 'हिंसक युद्ध' की बात नहीं है। भगवान अगर हिंसक युद्ध की प्रेरणा दे तो आज के संसार में जो मनुष्य हिंसक युद्ध करने की प्रेरणा दे रहे हैं फिर उनमें और भगवान में अंतर ही क्या रह जायेगा! दुनिया के मनुष्य हिंसक युद्ध की प्रेरणा दे सकते हैं लेकिन भगवान जो मनुष्य को ऐसे घृणित कार्य से ऊपर उठाते हैं, वे यह प्रेरणा कैसे दे सकते है? भगवान गीता में सूक्ष्म ते सूक्ष्म भावों को स्पष्ट करते हैं। एक अजर-अमर-अविनाशी शक्ति की ओर ईशारा देते हुए आत्मा में कितनी शक्ति है, कितनी क्षमता है, इस बात को स्पष्ट करते हैं। विषयों में चित्त व वृत्तियाँ उसी प्रकार विषयाकार बन जाती हैं, जैसे जल साँचे के अनुसार अपना आकार बना लेता है। ये क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के बीच का संघर्ष है। जिसमें आसुरी वृत्ति का सर्वथा शमन कर परमात्मा में अपने चित्त को लगाकर उसके द्वारा निर्णय कर आसुरी वृत्तियों को समाप्त करता है। सुख-दुःख को समान समझने वाला धीर पुरूष अर्थात् आत्मा, इंद्रियों और विषयों के संयोग से व्यथित नहीं होता है। वह अमत्व की प्राप्ति के योग्य बन जाता है। ये है युद्ध का पहला विधि-विधान।

भगवान 'शरीर और आत्मा' के संबंध को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि कैसे देह में देहधारियों की बाल्यावस्था, यौवनावस्था और बुढ़ापा ये तीन अवस्थायें होती हैं। इसी प्रकार दूसरी देह की प्राप्ति भी एक परिवर्तित अवस्था है। इसमें आत्मा का कभी भी नाश नहीं होता है और न ही आत्मा के ऊपर प्रकृति का कोई प्रभाव पड़ता है अर्थात् न अग्नि उसे जला सकती है, न पानी उसको गीला कर सकता है, न हवा उसको सुखा सकती है, न तलवार उसको काट सकता है, आत्मा न कभी मरती है और न ही जन्म लेती है, यह अजन्मा, अविनाशी, शाश्वत् और आदि युगीन है। शारीरिक वध से आत्मा का वध नहीं होता, प्रकृति के पांचों तत्व भी मिलकर आत्मा को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकते हैं। जब आत्मा सद्गुणों से भरपूर होती है तो उसकी चमक बढ़ती है और जब विषय विकारों के वश में हो जाती है तब उसकी आभा कम हो जाती है। सांसारिक बंधनों में फंसकर आत्मा कमज़ोर हो जाती है और सांसारिक बंधनों से मुक्त रहने पर वह शक्तिशाली बन जाती है। आत्मा की शाश्वत्ता के बारे में बताते हुए कहते हैं कि जैसे व्यक्ति नये वस्त्र धारण करने के लिए पुराने वस्त्रों का त्याग करता है, वैसे ही आत्मा नया शरीर धारण करने से पहले पुरानी देह का त्याग करती है। ये शाश्वत् नियम है कि जिसने भी शरीर धारण किया है, उसे शरीर छोड़ना ही पड़ता है। आत्मा अविनाशी है, शरीर अविनाशी नहीं है। भगवान ने अर्जुन को कहा - हे अर्जुन! स्वधर्म को देखकर भी तुम भय करने योग्य नहीं हो, क्योंकि धर्मयुक्त युद्ध से बढ़कर अन्य कोई परम कल्याणकारी मार्ग नहीं है। यदि तू धर्मयुक्त युद्ध नहीं करेगा तो स्वधर्म और कीर्ति दोनों को खोकर पाप का भागी बनेगा। आत्मिक संपत्ति ही स्थिर संपत्ति है यह ज्ञानयोग, सांख्य सिद्धांत योग के अनुसार स्पष्ट की गई है। यहाँ जब स्वधर्म की बात आती है तो स्वधर्म माना क्या? मनुष्य जीवन को अगर देखा जाए तो 'शरीर और आत्मा' का जब सम्बन्ध हुआ तब ये जीवन प्रैक्टिकल में हुआ। इस जीवन में अगर देखा जाए तो शरीर की वास्तविकता को हम बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि ये शरीर माना ही पाँच तत्व। इसलिए जीवन जीने के लिए शरीर वही पाँच तत्वों की माँग करता है। आज श्वांस लेने के लिए ऑक्सीजन चाहिए क्योंकि शरीर ऑक्सीजन से बना है, इसी तरह जीवन जीने के लिए पानी चाहिए क्योंकि शरीर में 60 से 70 प्रतिशत पानी का हिस्सा है। व्यक्ति जब पानी पीता है तो यह सोचकर नहीं पीता है कि कितना पीना है। लेकिन जैसे ही शरीर के अंदर का जल स्तर संतुलित हो जाता है, तो वह पानी पीना छोड़ देता है। वह अधिक पानी नहीं पीता है कि कल के लिए चलेगा। ये पांचों तत्व उतनी ही मात्रा में ग्रहण करता है जितनी की शरीर की आवश्यकता होती है। ये इस शरीर की वास्तविकता है, क्योंकि शरीर उसी पांच तत्वों से बना हुआ है।

-क्रमशः

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

नई दिल्ली-पांडव भवन। करोल बाग क्षेत्र की सांसद मिनाक्षी लेखी को राखी बांधते हुए ब्र.कु. विजय।

दिल्ली-लोधी रोड। एम्स निदेशक डॉ. एम.सी. मिश्र को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गिरीजा।

जयपुर-कमल अपार्टमेंट। राजस्थान पत्रिका के संपादक भुवनेश जैन को राखी बांधते हुए ब्र.कु. स्वाति।

दिल्ली-मजलिस पार्क। भाजपा नेता,गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष सुखबीर सिंह कालरा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राजकुमारी।

दिल्ली-रोहिणी। ए.सी.पी. सीता राम मीणा को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नीलम। साथ हैं ब्र.कु. ज्योति।

मुंगेली। कलेक्टर डॉ. संजय अलंग को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सीमा।